while I was busy in a meeting, I said that I had cleared that. Are you aware that you have sent a notice for a special mention? (*Interruptions*) Are you aware? (*Interruptions*) I am not permitting you ... (*Interruptions*)

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: If the Chair is going to permit the same issue to be raised ... (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not permitting it.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: That is all.

THE DEPUTY CHAIRMAN: How do I know what he is going to speak? I have no mechanism to read people's mind. I wish I had. It would solve my problems very easily ... (*Interruptions*)

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: Even when I want to raise any issue in the zero hour, I send a notice in advance.

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is a very good practice ... (*Interruptions*)

SHRI G. SWAMINATHAN (Tamil Nadu): Madam, please permit me.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. A notice was given by Mr. Bhandare and Mr. Pramod Mahajan. He is not here but he did send a notice to me that he wants to raise an issue about the rail accident at Pune ... (*Interruptions*)

SHRI SURESH KALMADI: Madam ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: But you could have sent a notice. If you had sent that, you can associate ... (*Interruptions*) please just a minute ... (*Interruptions*)

SHRI SURESH KALMADI: All I am saying is ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Will you please sit down? (*Interruptions*)

SHRI SURESH KALMADI: Madam, all that I am saying about the rail accident is ... (*Interruptions*) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: One minute. I say one minute ... (*Interruptions*) ... I won't permit. I said, "You please sit down". You listen to me first. Listen to me first. You don't know what has happend. At 2.30 p.m., the Minister is also making a statement. आपका समाधान हो गया।

SHRI G. SWAMINATHAN: Madam, please permit me to say a few words on a very important subject ... (*Interruptions*) ... please permit me one minute to say something about a very important subject.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. I don't know why people get so agitated. There is no need to get agitated. We are all concerned about tragedies in this country at least ... (*Interruptions*) ... One minute. I told you I won't permit. Now, Mr. Paswan. मान साहब एक मिनट।

RE. DEMAND FOR INVESTIGATION INTO MARUTI DEAL

श्री ब्रह्मदेव आनन्द पासवान (बिहार) : महोदया, मैं जो कहने जा रहा हूं यह एक जबरदस्त हर्षद मेहता प्रतिघोटाला काण्ड कहा जाए या एक और बोफोर्स काण्ड कहा जाए, नई दिल्ली के अन्दर हो रहा है।

उपसभापति जी, आज मैं सदन का एक महत्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं कि मारुति तीन प्रकार की होती है—एक 1000 सी०सी०, दूसरी 800 सी०सी० और तीसरी ओमनी जिसे मारुति वैन भी कहते हैं। बिहार से एक कर्मठ किसान एक मारुति खरीदने के लिये दिल्ली आए। मुझे बताया। मैं मारुति के डीलर के पास गया तो उसने कहा, आप पूरा

पैसा जमा कर दें, 3-4 महीने में आपको मारुति दे दी जाएगी। मैंने कहा कि हमें अभी तुरन्त चाहिए। तो उसने एक दलाल से मिला दिया। मैं दलाल से मिला। दलाल बोला कि आपको 15 हजार रुपये और लगेंगे, आज ही डिलीवरी दे दी जाएगी। वही मारुति, वही दुकान, वही डीलर। हमें समझ में नहीं आया।

मैंने पता लगाना शुरू किया क्योंकि हमारे एक मित्र जो सांसद हैं उन्हें भी खरीदनी थी। उन्होंने भी 30-11-93 को इसी साल उद्योग विभाग की परामर्शदात्री समिति की बैठक में यह सवाल रखा था। उस समय तो मैं नहीं समझ पाया था लेकिन मैं चिन्तित हो गया था।

4-5 डीलरों के यहां मैंने घूमना शुरू किया। क्लासिक मोटर्स, नोट किया जाए—भीखाजी कामा प्लेस, आर०के०पुरम, नई दिल्ली, साया ओटोमोबाइल्स, जी०टी० कर्नाल रोड, दिल्ली, कम्पीटेंट मोटर्स, कनाट प्लेस, नई दिल्ली, मेगा आटोमोबाइल्स, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली और पासको आटोमोबाइल्स, गुड़गांवा, हरियाणा। ये सब तमाम एजेंसियां, फर्जी ड्राइवर के नाम पर, आर० टी० ओ० की मिलीभगत से फर्जी लाइसेंस, फर्जी रजिस्ट्रेशन, फर्जी परमिट बनाकर मारुति कम्पनी के साथ शीर्षस्थ मैनेजमेंट पदाधिकारियों से मिलकर मारुति 1000 सी०सी० टैक्सी के रूप में चलाने के नाम पर हजारों की संख्या में निकालती रही हैं और निकाल रही हैं। यहां पर एक बात की जानकारी सदन को देना चाहता हूं कि कार के रूप में मारुति निकालते ही उन्हें 70 हजार रुपये ज्यादा देना पड़ता है और जो गरीबों के नाम पर टैक्सी के नाम पर निकाली जाती है उसमें 50 से 70 हजार रुपये उत्पादन शुल्क कम हो जाता है। हजारों-हजार की संख्या में करोल बाग, नई दिल्ली के तमाम डीलर दलालों के माध्यम से टैक्सी के रूप में मारुति कम्पनी से लेकर उसे कार के रूप में एक दिन में ही परिवर्तित कर सारे कागजात बनाकर बेच रहे हैं। पहली बात तो गरीब ड्राइवर के नकली नाम पर टैक्सी के रूप में निकाल कर ड्राइवर को टैक्सी के रूप में नहीं देना बहुत बड़ा जुल्म है। देश के गरीबों का हक भी मारा जा रहा है। दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि एक मारुति 1000 सी०सी० पर 50 से 70 हजार रुपया भारत सरकार को उत्पादन शुल्क नहीं देकर सरकार को करोड़ों रुपये का चूना लगाया जा रहा है।

उपसभापति जी, मेरे जैसे साधारण आदमी अगर मारुति लेने के लिए किसी एजेंसी में पैसा जमा करते हैं तो उन्हें तीन-चार महीने में मारुति गाड़ी दी जाती है और करोल बाग के डीलर एवं दलाल 10-15 हजार रुपये अधिक लेकर एक दिन में ही गाड़ी दे देते हैं। अभी वर्तमान में करोल बाग के डीलरों एवं दलालों ने करोड़ों-करोड़ रुपये फर्जी नामों से मारुति 1000 सी० सी० की बुकिंग करा कर रखे हुए हैं जो आने वाले बरसों-बरसों दिनों में करोड़ों-करोड़ों रुपयों का घपला करते रहेंगे। ये घपले चार-पांच वर्षों से होते चले आ रहे हैं। मैं सदन के समक्ष कहूं कि यह एक नया हर्षद मेहता प्रतिघोटाला काण्ड या एक नया बोफोर्स काण्ड है तो क्या कोई अनुचित है।

मैं सदन के माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि इसकी जांच सी० बी० आई० एवं इन्कम टैक्स विभाग के द्वारा अविलम्ब कराई जाए और संसद के पटल पर माननीय सांसदों के सूचनार्थ जांच प्रतिवेदन 24 दिसम्बर के पूर्व रखा जाए। अगर सरकार तुरन्त जांच पड़ताल करके रोक नहीं लगाती है तो यह घपला आगे चलकर एक विशाल रूप धारण कर लेगा। और भारत सरकार की आर्थिक दशा पर विपरीत असर पड़ेगा, क्योंकि कुछ दिन के बाद यह घपला अरबों में चला जाएगा और मैं नहीं, सारे लोग कहेंगे कि इस घपले में सरकार का भी हाथ है, क्योंकि सरकार का करोड़ों-करोड़ रुपये का उत्पादन शुल्क नहीं देकर डीलर एवं दलाल मिलीभगत से सरकार को चूना लगा रहे हैं।

—